शिवपुरी एक सांस्कृतिक पर्यटन स्थल

डॉ० एन बी० लाल* एवं डॉ० पदम सिंह**

शिवपुरी का शाब्दिक अर्थ ''शिव की पुरी'' अर्थात् जहाँ स्वयं भगवान शिव निवास करते हो। भावनात्मक दृष्टि से इस स्थान के नामकरण का आभास होता है। इस स्थान के नामकरण की पृष्ठ भूमि में निश्चित ही यहाँ की भौगोलिक परिस्थिति महत्वपूर्ण स्थान रखती है क्योंकि यह स्थान विन्ध्याचल पर्वत की सुन्दर पहाड़ियों के बीच स्थित है और भारतीय आध्यात्मिक अवधारणा के अनुसार भगवान शिव सदा ही पर्वत श्रेणियों में विश्राम करते हैं।[1] साथ ही प्राचीन काल से ही शिवपुरी भगवान शिव की आराधना का महत्वपूर्ण केन्द्र रहा है।[2] उपरोक्त दोनों तर्को के आधार पर हम शिवपुरी के नामकरण के विषय में यह स्वीकार कर सकते हैं कि शिवपुरी का नामकरण भौगोलिक परिस्थिति तथा भावनात्मक एवं आध्यात्मिक पृष्ठ भूमि के कारण पड़ा होगा।

शिवपुरी समुद्री सतह से 1515′ की ऊँचाई पर 25°–26 उत्तर तथा 77°–41 पूर्व अक्षांश व देशान्तर पर स्थित है।[3] शिवपुरी म.प्र. के ग्वालियर संभाग की एक महत्वपूर्ण प्रशासनिक इकाई जिला मुख्यालय है तथा राष्ट्रीय राजमार्ग क्र. 3 पर संभाग मुख्यालय ग्वालियर से 120 किमी. तथा जिला गुना से 95 किमी. पर स्थित है। शिवपुरी से ग्वालियर तथा गुना के लिये मध्यप्रदेश राज्य सड़क परिवहन तथा राजस्थान राज्य सड़क परिवहन की बस आवागमन के लिये उपलब्ध है। शिवपुरी से ग्वालियर तथा गुना के लिये नवनिर्मित रेलमार्ग है तथा शिवपुरी के पूर्व में भारतीय रेल विभाग का महत्वपूर्ण प्रशासनिक कार्यालय एवं जंक्शन झांसी रेल स्टेशन शिवपुरी से मात्र 100 किमी. की दूरी पर है। झांसी से लगभग सम्पूर्ण भारत वर्ष में रेलमार्ग द्वारा आवागमन किया जा सकता है।

शिवपुरी का भौगोलिक क्षेत्र 10,278 वर्ग किमी. है तथा वर्ष 1991 की जनगणना के अनुसार शिवपुरी की जनसंख्या 11,32,988 थी।[4] शिवपुरी में कृषि उत्पादन क्षेत्रफल 4828 सौ हेक्टेयर है।[5] शिवपुरी में औसत वर्ष 733.8 किमी. होती है।[6] शिवपुरी के पश्चिम में नवनिर्मित जिला मुख्यालय श्योपुरकलां है। श्योपुरकलां से 40 कि. मी. की दूरी पर राजस्थान का सवाई माधवपुर रेलवे जंक्शन (स्टेशन) है। जो दिल्ली, मुम्बई रेलमार्ग पर है।

जिला शिवपुरी के अंतर्गत – शिवपुरी, पिछोर, पोहरी, कोलारस, करैरा, अनुविभाग तथा शिवपुरी, करैरा, कोलारस, नरवर, पोहरी, पिछोर तथा खनियाधाना तहसील आती है। जिला शिवपुरी, करैरा, नरवर, कोलारस, बदरवास, पोहरी, पिछोर व खनियाधाना विकासखण्ड में विभक्त है।[7] धार्मिक दृष्टि से शिवपुरी एक धार्मिक सहिष्णुता का केन्द्र है। शिवपुरी में प्रायः सभी धर्मो के लोग आपसी सामंजस्य के साथ मिल जुलकर निवास करते हैं। सभी धर्मो के लोग अपने–अपने धर्म एंव मतानुसार धार्मिक त्योहार एवं संस्कारों को सम्पादित करते हैं। नगरों में अनेकों शिवालयों के अतिरिक्त अन्य मंदिर है। इसाई चर्च के साथ–साथ

* सहायक प्राध्यापक (इतिहास), राजकीय महाविद्यालय, माठ (मथुरा) उ.प्र.
**सहायक प्राध्यापक (इतिहास), आई.आई.पी.एस. कॉलेज, ग्वालियर (म.प्र.)

मुसलमानों की मस्जिदें एवं जैनों के चैतन्यालय स्थित है।[19] धार्मिक दृष्टिकोण से शिवपुरी का परिचय एक शांत एवं धार्मिक संतुलन एवं सामंजस्य का क्षेत्र है।

पर्यटन की दृष्टि से भी शिवपुरी भारत के कई पर्यटन स्थलों से कम नहीं है लेकिन राज्य एवं भारत सरकार द्वारा उचित महत्व न मिल पाने के कारण शिवपुरी पर्यटन के क्षेत्र में अपना महत्वपूर्ण स्थान नहीं बना सका, और मात्र माधव राष्ट्रीय उद्यान के लिये जाना जाता है। जबकि सिंधियाकालीन वस्तुशिल्प की महत्वपूर्ण छतरियाँ मुगलकालीन आगरा तथा दिल्ली के वस्तुशिल्प नमूनों से कहीं अधिक सुंदर दिखती है जो पर्यटकों को आकर्षित कर सकती है। परंतु पर्याप्त प्रचार एवं रखरखाव के कारण शिवपुरी को पर्यटन की दृष्टि से वह स्थान नहीं मिल सका जो मिलना चाहिये।

प्राचीन भारतीय इतिहास के प्रमुख स्त्रोतों में शिवपुरी का विशेष उल्लेख नहीं मिलता है। किवदंतियों के अनुसार शिवपुरी आदिकाल से घने जंगलों के लिये प्रसिद्ध रहा था, तथा विशाल पर्वत श्रेणियों के कारण भगवान शिव का आराधना स्थल रहा। इतिहासकारों का मत है कि प्राचीनकाल में शिवपुरी का क्षेत्र नरवर राज्य के अधीन आता था। नरवर नगर की स्थापना के विषय में दो मत है – प्रथम मतानुसार विक्रम संबत् 8 में राजा नल ने नरवर की स्थापना की थी।[1] दूसरे मतानुसार विक्रम संवत 8 में राजा श्रीपाल ने नरवर गढ़ नगर बसाया था। नरवर निशादराज नल की राजधानी थी।[2]

शिवपुरी का क्षेत्र विभिन्न राजवंश के अधीन रहा। गुप्तकाल में यह क्षेत्र नागवंशी राजाओं के प्रभुत्व में था कालांतर में गुप्त शासक समुद्रगुप्त ने नागशासक गणपति को पराजित कर नरवर क्षेत्र पर अपना अधिकार कर लिया।[2] 1000 ई. से पूर्व इस क्षेत्र पर परमार शासकों का अधिकार था। 1010 में राजा भोज ने इस क्षेत्र पर अपना प्रभुत्व स्थापित करने के लिए प्रयास किया, परमार शासकों के बाद कुछ समय तक इस क्षेत्र पर कछवाहा शासकों का प्रभुत्व रहा। 1129 ई. में परिहार शासकों ने इस क्षेत्र पर अधिकार कर लिया। कछवाहा शासकों के पश्चात यह क्षेत्र नासिरउद्दीन के अधीन हो गया।[3] सन् 1298 ई. में इस क्षेत्र पर गणपति नामक शासक का अधिकार था, जिनकी काल में अलाउद्दीन खिलजी ने आक्रमण किया, जिसमें उन्हें आंशिक सफलता प्राप्त हुई। कालांतर में इस क्षेत्र पर मालवा शासक गौर ने अधिकार कर लिया।[4]

इस प्रकार तैमर आक्रमण से पूर्व यह क्षेत्र गुप्त शासक समुद्रगुप्त, परमार शासकों, कछवाहा शासको, खिलजी शासक अलाउद्दीन खिलजी तथा मालवा शासक गौरी के अधिपत्य में रहा, तथा समय–समय पर जिन–जिन शासकों के अधीन यह क्षेत्र रहा उनके सांस्कृतिक प्रभावों से यह क्षेत्र अछूता नहीं रहा, सांस्कृति प्रभाव समय–समय पर परिवर्तित होते रहे और तत्कालीन संस्कृति का प्रभाव परिलक्षित होता है। तैमर आक्रमण के बाद इस क्षेत्र पर तोमर शासकों का अधिकार हो गया। इसी काल में सिकन्दर लोदी ने इस क्षेत्र पर अपना अधिकार कर लिया तथा वह 1507 से 1508 तक नरवर में ठहरा। अपने नरवर प्रवास के मध्य सिकन्दर लोदी ने नरवर में जैन मंदिर की मूर्तियों को खण्डित किया।[5] खण्डित मूर्तियों के अवशेष आज भी शिवपुरी संग्रहालय में संरक्षित है। सिकन्दर ने यहॉ से प्रस्थान करते समय इस क्षेत्र का स्वामित्व कछवाहा शासक राजसिंह को दे दिया।

भारत पर आक्रमण के समय नरवर, शिवपुरी क्षेत्र कछवाहा शासक राजा रतन सिंह के अधीन था। राजनैतिक घटना क्रम में 1906 में रतन सिंह के पुत्र आसकरण के पुत्र राज सिंह नरवर के राजा बने। मुगलकाल में नरवर का महत्व बढ़ गया। विशेषकर अकबर के काल में नरवर एक महत्वपूर्ण स्थान हो गया। मुगलकाल में नरवर (शिवपुरी) के कछवाहा शासकों के साथ अकबर के संबंध सामान्य रहे, परंतु अकबर के पश्चात मुगलशासकों के साथ कछवाहा शासकों को संघर्ष करना पड़ा।[7]

ग्वालियर राज्य की स्थापना के बाद शिवपुरी का महत्व पुनः बढ़ गया, सिंधिया राज्य की स्थापना के समय कछवाहा शासक माधव सिंह का इस क्षेत्र पर अधिपत्य था, जिसके साथ सिंधिया शासकों ने संघर्ष किया, तथा माधवसिंह को पराजित कर सिंधिया ने नरवर किला अपने आधिपत्य में कर लिया। शिवपुरी पर 1804 में सिंधिया का अधिकार हो गया। 1903 में नरवर का सूवा शिवपुरी के अंतर्गत आ गया।[8] सिंधिया शासक माधवराव ने शिवपुरी तथा नरवर के विकास में विशेष रूचि ली। माधवराव सिंधिया ने शिवपुरी को महत्व ही नहीं दिया वरन् अपनी ग्रीष्मकालीन राजधानी भी बनाया। शिवपुरी को वर्तमान प्रशासनिक स्वरूप जिला मुख्यालय के रूप में ही सिंधियाकाल में प्राप्त हुआ।

शिवपुरी की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि अत्यंत गौरवपूर्ण नहीं रहीं परंतु मुगलकाल से ही शिवपुरी एक पर्यटन केन्द्र के रूप में देखा जाता रहा है।[9] शिवपुरी की सम्पूर्ण ऐतिहासिक पृष्ठभूमि को दो भागों में विभक्त किया जा सकता है। सिंधिया शासकों से पूर्व जब शिवपुरी का राजनैतिक इतिहास नरवर में केंद्रित था तथा दूसरा भाग सिंधिया शासकों के अधीन, जब प्रथम बार शिवपुरी एक प्रशासनिक इकाई के रूप में दिखाई पड़ती है।

उपर्युक्त विवेचना के बाद हम इस निष्कर्ष पर पहुंचते है कि सिंधिया शासकों से शिवपुरी का केन्द्र नरवर था जिस पर गुप्तकाल के ऐतिहासिक साक्ष्य मिलते हैं तथा ग्वालियर राज्य की स्थापना के बाद सिंधिया शासकों ने शिवपुरी को केन्द्र माना तथा इसे जिला मुख्यालय का प्रशासनिक स्वरूप प्रदान किया। स्वतंतत्रा प्राप्ति एवं राज्य के विलयनीकरण के बाद से आज तक शिवपुरी जिला मुख्यालय के रूप में मध्यप्रदेश शासन की एक महत्वपूर्ण प्रशासनिक इकाई है।

प्राकृतिक सौंदर्य एवं वन सम्पदा से युक्त शिवपुरी का सामान्य सर्वेक्षक शोधकर्ता ने किया। सर्वेक्षण के मध्य शिवपुरी के ऐतिहासिक स्थलों एवं अन्य पर्यटन स्थलों का प्राप्त विवरण निम्नानुसार है–

जीजाबाई (सख्या राजे) की छतरी

शिवपुरी नगरी की रमणियक तथा प्राकृतिक सौंदर्य से माधवराव सिंधिया बहुत अधिक आकर्षित थे जिस कारण इस स्थल को अपनी माँ की छतरी बनाने के लिए चुना। इस योजना को मूर्त रूप देने के उद्देश्य से तत्कालीन सिधिया शासक माधवराव प्रथम ने अपनी माता जीजीबाई की छतरी का निर्माण 21 अगस्त 1921 को कराया।[1] पर्यटन की दृष्टि से शिवपुरी

में स्थित यह छतरी आकर्षण व सौंदर्यता की दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त किये है। ताजमहल की भांति इस छतरी का निर्माण भी एक बड़े उद्यान में किया गया है। जिस कारण इसकी सुंदरता में चार चांद लग जाते हैं। यह उद्यान अपनी सुन्दरता के कारण दर्शकों का मन मोह लेता है। इन घने सुंदर वृक्षों के मध्य ही इस सुंदर छतरी के दर्शन किये जा सकते है। काशीकादरी तथा पच्चीकारी का सुंदर नमूना इन छतरियों में देखने को मिलता है। ऐसा प्रतीत होता है मानो ताजमहल तथा एत्माउद्दौला के मकबरे के सदृश्य ही इसमें भी सुंदर काशीकादरी की गई है। इस छतरी का निर्माण इंजीनियर मु. असगर अली के करकमलों द्वारा किया। इसके निर्माण कार्य में मेजर हस्मतुल्ला खां, पी.डब्ल्यू.डी. (मेम्बर) तथा कई एडमिनिस्ट्रेटिव आफीसर एवं ठेकेदारों का विशेष एवं सराहनीय योगदान रहा। इसको सौंदर्यता प्रदान करने में एक व्यक्ति का हाथ नहीं था। अपितु इसकों मूर्त रूप एवं आकर्षक रूप प्रदान कराने में कई वर्षों का समय लगा जिसके कारण आज यह छतरी शिवपुरी में अपनी विशेष स्थान बनाये हुये है।[2]

इस सुंदर छतरी का निर्माण कार्य 'कौंसिल ऑफ रीजेंसी' काल में किया गया। इस छतरी में हिन्दू तथा मुस्लिम स्थापत्य शैली के दर्शन पूर्णरूपेण परिलक्षित होते हैं।[3] डालियों तथा पत्तों पर बैठे पक्षियों की खुदाई देखकर निर्जीव व सजीव का आभास नहीं रहता। इसका निर्माण सफेद संगमरमर से कराया गया है। उस समय इस छतरी की लागत लगभग 11 लाख रूपये आंकी गई थी।[4]

बाणगंगा

वैष्णव देवी के दर्शन के लिये जाते समय सर्वप्रथम बाणगंगा के दर्शनों का अवलोकन करना होता है। लेकिन यहाँ कुछ अत्यंत छोटे, कुछ अत्यंत बड़े–बड़े सुंदर लगभग 62 कुण्डों के दर्शन होते है। इन सभी के अतिरिक्त कुछ महती विशालकाय कुण्डों के दर्शन अत्यंत मनमोहक है। इनका जल भी भक्तगणों के लिये अत्यंत पवित्र है। श्रद्धालु इनके जलों में स्नान कर पवित्र तथा पापमुक्त होते हैं। इनके पवित्र जल के अतिरिक्त कुण्ड के पास ही शिव की प्रतिमा तथा शिव लिंग नंदी की प्रतिमा युक्त इनके सौंदर्य को अधिक बढ़ाती है। यह स्थान अत्यंत पवित्र धार्मिक स्थान है। शिव प्रतिमा के अतिरिक्त हनुमान गंगा जी के अनेकों मंदिर है। इन कुण्डों की मान्यता भी वैष्णव देवी की बाणगंगा के समान ही मानी जाती है। यहाँ का प्राकृतिक सौंदर्य, अनुपम छटाऐं अत्यंत मनमोहक है। पर्यटकों के लिये यह स्थान अत्यंत मनमोहनीय है।

भदइयाँ कुण्ड

शिवपुरी से कुछ ही दूरी पर बाणगंगा से कुछ आगे जाने पर भदइयाँ कुण्ड है। भदइयाँ कुण्ड चारों ओर से सुंदर पेड़ों से घिरा हुआ अत्यंत रमणीय स्थल है। इस स्थान पर पहुंचने के लिये सुंदर–सुंदर बाग–बगीचों से गुजरना पड़ता है। भदइयाँ कुण्ड पहुँचने पर हमें भव्य सुंदर झील के दर्शन होते हैं। इस झील के समीप एक सुंदर व आकर्षक बरामदा है जहाँ गौमुख के दर्शन होते है।पर्यटकों को यह स्थान अत्यंत सुंदर व सजीव लगता है। इस सुंदर कलाकृति गौमुख से निरंतर स्वच्छ, स्वादिष्ट, शक्तिवर्धक, निर्मल एवं पारदर्शी जल बहता हुआ दर्शकों का मन मोह लेता है। इसके जल में अनेकों खनिज पदार्थ मिले है जो स्वास्थ्य

की दृष्टि से महत्वपूर्ण है।[5] इसके जल की इन्ही विशेषताओं के कारण स्वर्गीय माधवराव के उपयोग हेतु इस जल को इंग्लैण्ड तक भेजा जाता है। इस कुण्ड की उपरी सतह पर विशाल तथा बड़े–बड़े वृक्षों से आच्छादित मैदान है। पर्यटन की दृष्टि से यह एक अत्यधिक महत्वपूर्ण व आकर्षक पर्यटन स्थल है। यही पर दर्शकों के लिये नौका विहार का अवसर भी मिलता है। वर्षाकाल में तो इस स्थान की शोभा देखते ही नही बनती है। ऐसा प्रतीत होता है मानो प्रकृति ने अपने सौंदर्य को चारों ओर बिखेर दिया हो।

माधव राष्ट्रीय उद्यान

हमारे देश के प्रसिद्ध राष्ट्रीय उद्यानों में से एक राष्ट्रीय उद्यान शिवपुरी में है। शिवपुरी से लगभग 7 किमी. की दूरी पर स्थित यह उद्यान अपने नैसर्गिक सुंदरता को समेटे हुये है। ग्वालियर राज्य घराने के राजाओं की आखेट का यह प्रमुख स्थान है। घुमावदार पहाड़ियों को काटकर इसका रास्ता बनाया गया है। इन मार्गो के द्वारा पर्यटक प्रत्येक स्थान पर सुरक्षित पहुंच सकता है। उद्यान में एक लम्बी पक्की सड़क है। रास्ते के बीच में झरने, पहाड़ियाँ, बगीचे पर्यटकों का मन मोह लेते है। माधव राष्ट्रीय उद्यान के सर्वेक्षण के समय हमें अनेकों वन्य पशुओं के दर्शन होते है। इनके जीवन संबंधी जानकारी भी हमें कई शिलाओं पर अंकित मिलती है। प्राचीन समय का इतिहास इस बात का प्रमाण देता है कि ग्वालियर राज्य में जब भी काई अतिथि आता है तो उसे आखेट के लिये अवश्य ही इस उद्यान ले जाया जाता है।[7] इस सुंदर वन में शेर, चीते, चितल, तेंदूए, सांभर, हिरन आदि को आसानी से देखा जा सकता है।8 पक्षियों की यहाँ लगभग 250 प्रजातियॉ पाई जाती है।[9] यहाँ के पक्षी अधिकांशतः जलीय पक्षीय है जो शीतलकाय में दूर से आने लगते हैं तथा फरवरी मार्च में वापिस चले जाते हैं।[10] पक्षियों में मौर, तीतर, वटेर, मृगराज आदि पक्षी उल्लेखनीय है। जलीय पक्षियों में – सारस, कुंज, ठोक, जलमुर्गी, पनडुब्बी, हंस आदि प्रमुख है।[11] इस स्थान को टाईगर सफारी के नाम से भी अभिहित किया जाता है। मान्यता है कि आज से लगभग 2 दशक पूर्व यहाँ शेर खूब पाये जाते थे। यहाँ की सुंदरता को देखने के लिये अक्टूबर का समय सबसे उपयुक्त है। सुबह के समय अधिकांश वन्य प्राणियों को देखा जा सकता है। इस राष्ट्रीय उद्यान पर स्थित एक भवन जार्ज कौंसिल पर जाने के लिये सीढ़िया बनी हुई है। इस राष्ट्रीय उद्यान में माधव सागर तथा संख्या सागर नामक दो निर्मित झीले हैं जहाँ मछलियाँ एवं मगरमच्छों को देखा जा सकता है।

तात्याटोपे की प्रतिमा

प्रथम स्वाधीनता संग्राम के अमर सैनानी तात्याटोपे की विशाल प्रतिमा का निर्माण किया गया। इसे पुण्य तीर्थ के नाम से भी जाना जाता है। तात्या टोपे ने नर्मदा व चंबल प्रदेश में सैनिक एकत्रित करके अंग्रेजों से युद्ध जारी रखा। वह अकस्मात तुरंत प्रकट होकर बिजली की तरह लुप्त हो जाता था। समस्त विश्व में अनेक उसके समान कोई दूसरा योद्ध नहीं था। 1859 में अंग्रेजों ने इसे कैद कर फांसी की सजा सुनाई। शिवपुरी में फाँसी के पूर्व तात्याटोपे ने अंग्रेजों की अदालत में सिंह गर्जना की – न्याय, युद्ध तथा रणभूमि के अतिरिक्त मैने कभी किसी यूरोपीय स्त्री या पुरूष की हत्या नहीं की। मैं अंग्रेजों का गुलाम नही हूँ इसलिये मैं गद्दार नहीं माना जा सकता। न तो मेरा जन्म अंग्रेजी सीमा में हुआ और न मैंने कभी उनके प्रति राजभक्त रहने की प्रतिज्ञा ही ली। मैं पेशवाओं का सेवक हूँ।[12] सन् 17 अप्रैल

1859 को उन्हें मृत्युदण्ड दिया गया। अमर शहीद तात्याटोपे की समाधि स्थल को देखकर हम नतमस्तक हो जाते हैं।

सुल्तानगढ़ जलप्रपात

सुल्तानगढ़ जलप्रपात के सौंदर्य को विस्मृत नही किया जा सकता। मोहना से पहले ए.बी. रोड़ पर स्थित शिवपुरी से 60 कि.मी. की दूरी पर स्थित अत्यधिक मनोरम स्थल है। यहाँ पर पार्वती नंदी का जल आकर एकत्र होता है। वर्षाकाल में यहाँ का सौंदर्य देखते ही नहीं बनता। पर्यटकों के लिये यह अत्यंत आकर्षक स्थल है। यहाँ के घने बन, झोपड़ियाँ, पहाड़ियाँ अनायास ही पर्यटकों का मन मोह लेते है। यहाँ के एकांक में बैठकर सदृश्य बिना लिखे नहीं रह पाता। अतः शिवपुरी को बार–बार देखने से मन नहीं भरता।

उपरोक्त सर्वेक्षणात्मक अध्ययन के बाद हम इस निष्कर्ष पर पहुंचते है कि शिवपुरी के ऐतिहासिक स्थल पर्यटन की दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण है। शिवपुरी की सिंधियाकालीन छतरियाँ एंव स्थापत्य के नमूने कलात्मक है तथा हिन्दू एवं विदेशी कला संस्कृति का सम्मिश्रण है।

संदर्भ

1. करण सिंह : इंडियन टूरिज्म, आसपेक्ट्स ऑफ ए ग्रेट ऐडवेन्चर दिल्ली 1982
2. डॉ. संजय भजूपुरिया, शिवपुरी, नरवर, चंदेरी का दिग्दर्शन, सुधा प्रकाशन ग्वालियर 1992 पृ. 32
3. श्रीमती कमलेश श्रीवास्तव, प्रदेश के पर्यटन स्थलों का ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक सर्वेक्षण, अप्रकाशित शोध प्रबंध (इतिहास) जीवाजी विश्वविद्यालय, ग्वालियर (म.प्र.)
4. डॉ. अशोक कुमार मैन्धेला – पर्यटन उद्योग में आवासीय सुविधाओं का विश्लेषणात्मक अध्ययन अप्रकाशित शोध प्रबन्ध (अर्थशास्त्र) जीवाजी विश्वविद्यालय, ग्वालियर।
5. डॉ. एस.के. कुलश्रेष्ठ, निदेशक, भारतीय पर्यटन एवं यात्रा प्रबंधन संस्थान ग्वालियर से व्यक्तिगत साक्षात्कार से प्राप्त जानकारी के अनुसार।
6. म.प्र. पर्यटन निगम वार्षिक रपट वर्ष 1994–95 पृ. 731
7. म.प्र. शासन के संस्कृति विभाग के अभिलेख के अनुसार।